Unit-4

पाठ्यक्रम के निर्धारक तत्त्व
(Determinants of Curriculum)

13

पाठ्यक्रम का प्रत्यय
(Concept of Curriculum)

प्रस्तावना

शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया मानी जाती है जिसमें बालक के बहुमुखी तथा सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की क्रियाओं को प्रयुक्त करते हैं, जिनसे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जाता है। शिक्षण की क्रियाओं का सम्पादन का आधार पाठ्यवस्तु अथवा विषयवस्तु होती है। पाठ्यवस्तु विकास के लिये एक प्रमुख साधन है परन्तु अतीत में इसे साध्य भी माना जाता रहा है। शिक्षक अपनी शिक्षण क्रियाओं द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है जिसमें छात्रों को नेय अनुभव होते हैं तथा उन्हें कुछ करना भी पड़ता है। परिणाम यह होता है उनमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन होता है अथवा वे सीखते हैं। सीखने में व्यवहार परिवर्तन आवश्यक होता है। इस प्रकार शिक्षण क्रियाओं का आधार पाठ्यवस्तु या विषयवस्तु होती है। विषयवस्तु के प्रारूप को साधारणत: पाठ्यक्रम (Curriculum) कहते हैं। शिक्षा तथा शिक्षण का स्वरूप पाठ्यक्रम के प्रारूप द्वारा निर्धारित होता है। शिक्षा की प्रक्रिया की धुरी पाठ्यक्रम है। शिक्षा के इतिहास का अवलोकन करने पर विदित होता है कि पाठ्यक्रम का अर्थ एवं इसका प्रारूप बदलता रहा है। इस पुस्तक में पाठ्यक्रम सम्बन्धी तीन मौलिक प्रश्नों—क्या, क्यों तथा कैसे? का उत्तर देने का प्रयास किया गया है। जिससे पाठ्यक्रम प्रत्यय के अर्थ, प्रारूप एवं उसकी उपादेयता को बोधगम्य किया जा सके।

पाठ्यक्रम का अर्थ
(Meaning of Curriculum)

अंग्रेजी भाषा का पाठ्यक्रम के लिये 'करीक्यूलम' (Curriculum) शब्द का प्रयोग किया जाता है। परन्तु 'करीक्यूलम' लेंटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है—'दौड़ का मैदान' (Race Course)। शिक्षा के अन्तर्गत इसका अर्थ है, ''छात्रों का कार्य क्षेत्र'' अथवा छात्रों को दौड़ का मैदान। यहाँ पर दो शब्द—दौड़ तथा मैदान प्रयुक्त किये गये हैं। 'मैदान' का अर्थ पाठ्यक्रम से है और 'दौड़' का अर्थ छात्रों द्वारा अनुभव एंव उनकी क्रियाओं से है। शिक्षक पाठ्यक्रम की सहायता से अपनी शिक्षण क्रियाओं का सम्पादन करता है जिसमें छात्र

अनुभव तथा क्रियायें करके अपना विकास करता है और अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँच जाता है। इस प्रकार छात्र मैदान में दौड़ करके अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षक की दृष्टि से पाठ्यक्रम एक दिशा एवं साधन है जिसका अनुसरण करके शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। पाठ्यवस्तु के व्यवस्थित रूप को पाठ्यक्रम की संज्ञा तदेते हैं जो छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए तैयार किया जाता है।

पाठ्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने भी किया है। समाजशास्त्री पाठ्यक्रम का अर्थ अधिक व्यापक लगाते हैं उनके अनुसार 'पाठ्यक्रम' शब्द का अर्थ–उन सभी क्रियाओं एवं परिस्थितियों से होता है जिनका नियोजन एवं सम्पादन विद्यालय द्वारा बालकों के विकास के लिये किया जाता है। शिक्षा के उद्देश्य बदलते रहे हैं इस लिये पाठ्यक्रम का नियोजन एवं उसका प्रारूप भी बदलता रहा है। इसलिये पाठ्यक्रम का अर्थ भी बदलता रहा है। अतीत में पाठ्यक्रम का अर्थ संकुचित था कुछ विषयों में शिक्षा के प्रारूप को ही पाठ्यक्रम कहते थे परन्तु आज के सन्दर्भ में अधिक व्यापक अर्थ हैं। बालक को भावी जीवन के लिये तैयार कर सकें ऐसा पाठ्यक्रम होना चाहिये। केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं है।

पाठ्यक्रम की परिभाषा
(Definition of Curriculum)

शिक्षाशास्त्रियों ने पाठ्यक्रम की अनेक प्रकार से परिभाषा की हैं, कुछ प्रमुख परिभाषायें इस प्रकार हैं–

कनिंघम— *"कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यक्रम) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियों (स्कूल) में ढाल सके।"*

"It (curriculum) is a tool in the hands of the artist (teacher) to mould his material (pupil) according to his ideal (objective) in his studio (school)."–Cunningham

फ्रोबेल— *"पाठ्यक्रम को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिये।"*

"Curriculum should be conceived as asn epitome of the roounded whole of the knowledge and experience of the human race."–Froebel

मुनरो— *"पाठ्यक्रम में वे सब क्रियायें सम्मिलित हैं जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के हेतु विद्यालय में उपयोग करते हैं।"*

"Curriculum includes all those activities which are utilised by the school to attain the arm of education." –Munroe

हार्न— *"पाठ्यक्रम वह है जो बालकों को पढ़ाया जाता है। यह शान्ति पूर्ण पढ़ने या सीखने से अधिक है। इसमें उद्योग, व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास और क्रियायें सम्मिलित हैं।"*

कैसबैल— *"पाठ्यक्रम में वे सभी वस्तुयें आती हैं जो बालकों के, उनके माता-पिता एवं शिक्षकों के जीवन से होकर गुजरती है। पाठ्यक्रम उन सभी जीचों से बनता है जो सीखने वालों को काम करने के घण्टों में घेरे रहती है। वास्तव में पाठ्यक्रम को गतिमान वातावरण कहा जाता है।"*

"The curriculum is all that goes in the lives of children, their parents and teachers. The curriculum is made up everything that sorrounds the learner in all his working hours. In fact the curriculum has been described as the environment in motion."–Caswell

माध्यमिक शिक्षा आयोग— *"पाठ्यक्रम का अर्थ रूढ़िवादी ढंग से पढ़ाये जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है परन्तु उसके अन्दर वे सभी क्रिया-कलाप आ जाते हैं जो बालकों को कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं।"*

"Currculum does not mean the academic subject taught in the school but it includes total experience that a child receives at a school."–Secondary Education Commission

पाठ्यक्रम की पत्रिका (Journal of Curriculum studies) में कुछ परिभाषाओं का उल्लेख किया था, वे परिभाषायें इस प्रकार हैं—

जॉन एफ० कर के अनुसार—"विद्यालय द्वारा सभी प्रकार अधिगम तथा निर्देशन का नियोजन किया जाता है चाहे वह व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप में ,विद्यालय के अन्दर अथवा बाहर व्यवस्थित की जायें वे सभी पाठ्यक्रम का प्रारूप होती है।

"All the learning which is planned or guided by the school, whether it is carried on in groups or individually, inside or outside the school, is known as curriculum." **John F. Kerr**

फिलिप एच० टेलर के अनुसार—"पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, पाठयवस्तु, शिक्षण, शिक्षण विधियाँ तथा उद्देश्यों को सम्मिलित किया जाता है तथा इन क्रियाओं को कैसे आरम्भ किया जाये। इन तीनों पक्षों की अन्तःप्रक्रिया को पाठ्यक्रम कहते हैं।

"The curriculum consists of content, teaching methods and purpose may be in its rougt and ready may be a sufficient definition with which to start. These three dimesions interacting are operational curriculum."

–Philip H. Taylor

पाल हिस्ट के अनुसार—"उन सभी क्रियाओं का प्रारूप जिनके द्वारा छात्र शैक्षिक लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों को प्राप्त कर लेंगे पाठ्यक्रम की संज्ञा दी जाती है।"

"A programme of activities desigened so that pupils will attain, as far as possible, certain educational ends or objectives, is known as the curriculum." **–Paul Hirst**

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम केवल विद्यालय शिक्षण विषयों तक ही सीमित नहीं होता है अपितु विद्यालय में नियोजित एवं सम्पादित सभी क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है। जो बालक के विकास में सहायक होती है। पाठ्यक्रम में सम्पूर्ण क्रियाओं एवं अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है जो बालक में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन में सहायक होते है।

पाठ्यक्रम शब्द को कई अन्य अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है उनमें से प्रमुख शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं—

1. पाठ्य-वस्तु (Syllabus)—किसी विषय-वस्तु का विवरण शिक्षण के लिये तैयार किया जाता है जिसे शिक्षक छात्रों को पढ़ाता है उसे पाठ्यवस्तु कहते हैं।

2. प्रकरण (Topic)—शिक्षक अपने शिक्षण हेतु जिस पाठ्यवस्तु को तैयार करता और उसका आन्तरिक रूवरूप विकसित करता है उसे प्रकारण की संज्ञा दी जाती है।

3. अध्ययन का क्षेत्र (Field of Study)—छात्र को शिक्षक जिस पाठ्य वस्तु का शिक्षण करता है उसका सम्बन्ध प्राकृतिक, भौतिक, सामाजिक तथा आर्थिक तथ्यों से सम्बन्धित होता है यह अध्ययन क्षेत्र कहा जाता हैं मानव व्यवहारों का अध्ययन मनोविज्ञान के अर्न्तगत किया जाता है यह छात्र का अध्ययन क्षेत्र माना जाता है, जिसे अनुशासन (discipline) की भी संज्ञा दी जाती है।

4. रुचि का केन्द्र (Centres of Interests)—शिक्षण में छात्रों की रुचियों को भी ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है जैसे किसी छात्र को शिक्षण में रुचि है या कलात्मक कार्यों में अधिक रुचि है। यदि छात्रों को उनकी रुचियों के अनुसार शिक्षण किया जाये तो उसे रुचि का केन्द्र कहते हैं।

5. समन्वित अधिगम (Integrated Learning)—शिक्षक अपने शिक्षण द्वारा छात्र को ऐसे अनुभव प्रदान करता है जिससे जीवन की समस्याओं के समाधान के साथ विषयों का भी ज्ञान दिया जाता है तब उसे समन्वित अधिगम की संज्ञा दी जाती है।

6. शैक्षिक अनुभव (Educational Experience)—विद्यालय के अन्तर्गत जो छात्र को अनुभव प्रदान किये जाते हैं उनका सम्बन्ध बालकों के विकास से होता है। पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त अन्य सहगामी क्रियायें भी पाठ्यक्रम का अंग होती है। पाठ्यवस्तु तथा अन्य सहगामी क्रियाओं द्वारा जो अनुभव छात्र को दिये जाते हैं।

उन्हें शैक्षिक-अनुभव कहते हैं। पाठ्यक्रम के व्यापक अर्थ में शैक्षिक अनुभव अधिक समीप हैं जबकि अन्य शब्दों में पाठ्यवस्तु को ही महत्त्व दिया जाता है।

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु में अन्तर
(Difference between Curriculum and Syllabus)

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु दो शब्दों को साधारणत: एक ही अर्थ में प्रयोग किया है परन्तु शिक्षा शास्त्र के अन्तर्गत दोनों में अन्तर है। पाठ्यक्रम के अन्दर पाठ्यवस्तु को सम्मिति किया जाता है। पाठ्यवस्तु (Syllabus) से तात्पर्य होता है शिक्षण विषय की रूप-रेखा जोकिसी स्वर के लिये निर्धारित की गई है। उदाहरण के लिये हाई स्केल कक्षा में गणित विषय में किन-किन उप-विषयों की कितनी पाठ्यवस्तु अथवा प्रकरणों को पढ़ाने के लिये निर्धारित किया है जिस पर परीक्षा में प्रश्नों को करने के लिए दिया जायेगा, शिक्षक छात्रों को उन्हीं प्रकरणों को पढ़ाकर परीक्षा के लिये तैयार करता है उसे गणित की पाठ्यवस्तु (Syllabus) कहते हैं। पाठ्यवस्तु का सम्बन्ध ज्ञानात्मक (Cognative) पक्ष के विकास से होता है।

पाठ्यक्रम का सम्बन्ध बालक के सम्पूर्ण विकास से होता है। जिसके अन्तर्गत ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, शारीरिक एवं सामाजिक विकास को सम्मिलित किया जाता है। विद्यालय के अन्तर्गत शिक्षण क्रियाओं का सम्बन्ध ज्ञानात्मक पक्ष से होता है खेल-कूद तथा शारीरिक प्रशिक्षण का सम्बन्ध शारीरिक विकास से होता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय पर्वों पर जिन कार्यक्रमों का नियोजन किया जाता है उनसे सांसकृतिक एवं सामाजिक गुणों का विकास किया जाता है। इसके अतिरिक्त स्काउटिंग तथा एन० सी० सी० के आयोजन से नेतृत्व के गुणों का विकास होता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय के सभी क्रियाओं को पाठ्यक्रम का अंग माना जाता है। पाठ्यक्रम का स्वरूप अधिक व्यापक होता है जबकि पाठ्यवस्तु का स्वरूप सुनिश्चित होता है जिसके अन्तर्गत शिक्षण-विषयों के प्रकरणों को ही सम्मिलित करते हैं।